बावनी इमली नरसंहार : 1857–58 के विद्रोह का एक भूला हुआ अध्याय

सिद्धांत सिंह कुशवाह

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सार :

प्रस्तुत लेख स्वतंत्रता–संग्राम में फतेहपुर के स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को चित्रित करता है। यह फतेहपुर के भौगोलिक स्थिति को तो स्पष्ट करता ही है साथ ही फतेहपुर जनपद के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों की संक्षिप्त जानकारी भी प्रस्तुत करता है। यह लेख उपलब्ध प्रलेखीय ग्रंथों के आधार पर तैयार किया गया है, जिसमें बावनी इमली नरसंहार का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। इस लेख के अध्ययन करने से पता चल सकेगा कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उत्तर प्रदेश राज्य के फतेहपुर जिला के स्वतंत्रता सेनानियों का भी योगदान अहम एवं अतुलनीय रहा है।

मुख्य शब्द : फतेहपुर, स्वतंत्रता सेनानी, बावनी इमली, गणेश शंकर विद्यार्थी, रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, दरियाव सिंह, जोधा सिंह अटैया, ताहिर खाँ, नूरुद्दीन खाँ।

परिचय (Introduction) :

प्रयागराज और कानपुर के बीच का ऐसा भू–भाग जिसके दक्षिण दिशा में यमुना, उत्तर दिशा में गंगा, पूर्व में कौशांबी और पश्चिम में कानपुर लगा हुआ है। यह जनपद गंगा–यमुना नदी के बीच स्थित है जिसे दोआब क्षेत्र कहा जाता है। वर्तमान में फतेहपुर जनपद के नाम से जाना जाता है। वेदों–पुराणों के युग से लेकर समकालीन युग तक गंगा–यमुना के बीच स्थित फतेहपुर की पवित्र, हरी–भरी, संघर्षों की गाथा से संपृक्त, अत्यंत उर्वर और शस्य–श्यामला धरती भारत के गौरव को सदैव बढ़ाती आई है।

पौराणिक काल के बहुत बाद में फतेहपुर जनपद इतिहास और बौद्ध साहित्य में वर्णित भारतीय सोलह महाजनपदों में से एक 'सत्स' का भी हिस्सा रहा है। उस समय कौशांबी नगरी वत्स महाजनपद की राजधानी हुआ करती थी। महाजनपद काल से लेकर मध्य काल तक की अनेक ऐतिहासिक कड़ियों के बाद इतिहास–ग्रंथों को खँगालने पर ज्ञात होता है कि मध्य काल में फतेहपुर जिले का एक बड़ा हिस्सा अर्गल के राजाओं के कब्जे में था और तत्कालीन कन्नौज साम्राज्य का हिस्सा था। मुस्लिम काल के प्रारंभिक दौर में इसे कोड़ा परगना में शामिल कर लिया गया था और पंद्रहवीं शताब्दी में यह जौनपुर के अल्पकालिक राज्य का हिस्सा बना लिया गया था। अकबर के समय में फतेहपुर जिले का पश्चिमी आधा हिस्सा कोड़ा परगना का हिस्सा था, जबकि पूर्वी आधा कड़ा में शामिल था। अकबर ने इन परगनों को समाप्त कर 'फतेहपुर–हसवा' परगना बनाया था। दिल्ली शासकों की क्रमिक गिरावट के दौरान फतेहपुर को अवध के क्षत्रप को सौंप दिया गया था, लेकिन 1736 में यह मराठों के अधीन हो गया, जिन्होंने 1750 तक फतेहपुर पर कब्जा बनाए रखा। बाद में फतेहपुर के पठानों द्वारा यह पुनः हासिल कर लिया गया। 1773 में वारेन हेस्टिंस ने इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया और इसे अवध के नवाब को बेच दिया। 1801 में यह क्षेत्र ईस्ट इंडिया कंपनी के आधिपत्य में आ गया और तत्कालीन कानपुर व इलाहाबाद परगनों का मुख्यालय भिटौरा को बनाया गया। 1826 में फतेहपुर जिला स्थापित किया गया और मुख्यालय भिटौरा से हटाकर फतेहपुर नगर को बना दिया गया। इस जनपद में अनेक पौराणिक और ऐतिहासिक

स्थल आज भी हैं जैसे गंगा तट पर स्थित मृगु ऋषि की तपस्थली भिटौरा धर्म, संस्कृति एवं आस्था की साक्षी बनी हुई है।

फतेहपुर जनपद के शहीद :

पुरातत्वविदों, साहित्यकारो, समाजसेवियों, इतिहासकारों एवं शिक्षाविदों से स्वतंत्रता सेनानियों एवं शहीदों के बारे में प्राप्त जानकारी इस प्रकार है। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि यह जरूरी नहीं है कि नीचे दी जा रही जानकारी पूर्ण है। स्वतंत्रता सेनानियों के नाम इस प्रकार हैं – श्री विश्वनाथ खन्ना, वंश गोपाल त्रिपाठी, बसंत सिंह, चंद्रभूषण सिंह, गाजी खेडा, दीपनारायण सिंह, गजोधर प्रसाद पटेल, मुकुनुवा स्वर्णकार, चंद्रशेखर मिश्र, लच्छू प्रसाद, मनबोधन गुप्त एवं राम सिंह गौतम आदि।

1. **इलाहीबख्श :** इलाहीबख्श फतेहपुर के निवासी थे। 1857 के संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों से सांठ–गांठ करके उनकी आर्थिक सहायता के साथ–साथ अंग्रेज अधिकारियों पर आक्रमण करने के आरोपों में पकड़े गए। दगाबाजी के लिए अंग्रेजों द्वारा फांसी पर चढ़ा दिए गए।

2. **सुदल :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काकर ये स्वयं अनेक लड़ाइयाँ लड़े एवं अंग्रेजी सेना के साथ लड़ते हुए शहीद हो गए।

3. **सुरजू सिंह :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काकर इन्होंने अनेक लड़ाइयाँ लड़ीं एवं अंग्रेजी सेना के साथ लड़ते हुए शहीद हो गए।

4. **हसन खाँ :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के आरोपों में ये पकड़े गए एवं अंग्रेजी छापामारी कार्यवाही में मारे गए।

5. **सुभान खाँ** : 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के आरोपों में ये पकड़े गए एवं अंग्रेजी छापामारी कार्यवाही में मारे गए ।

6. **हिकमत उल्ला खाँ :** कानपुर के रहने वाले हिकमत उल्ला खाँ 1857 की क्रांति के समय फतेहपुर जनपद के मुख्यालय में डिप्टी कलेक्टर के पद पर सेवारत थे। वे एक राष्ट्रवादी भारतीय अधिकारी थे, इसलिए क्रांतिकारियों से जुड़े हुए थे। फलतः क्रांति के समय उन्होंने स्वयं ही विद्रोहियों का नेतृत्व किया और ठाकुर दरियाव सिंह आदि के साथ मिलकर फतेहपुर को स्वतंत्र करवाया। क्रांतिकारियों की पराजय के बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और मुकदमा चलाकर मृत्युदंड की सजा दी गई और एक पेड़ से लटकाकर 1858 में इन्हें शहीद कर दिया गया।

7. **होशियार खाँ :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में इन्होंने स्थानीय लोगों को विद्रोह के लिए प्रेरित किया और स्वयं अनेक मोर्चे सँभाले, बाद में जब ये गिरफ्तार हुए, तो फाँसी पर लटका दिए गए

8. **हातिम अली बेग :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में विद्रोहियों के एक गुट का नेतृत्व करते हुए इन्होंने अनेक मोर्चे सँभाले। बाद में ये गिरफ्तार हुए और फाँसी पर लटका दिए गए।

9. **कालीचरन :** सलेमपुर निवासी इस योद्धा ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ सन 1857 में विद्रोह का बिगुल बजाया ।

10. **कालीदीन :** ये 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों

की आर्थिक सहायता के साथ–साथ अंग्रेजी अधिकारियों पर आक्रमण करने के आरोपों में पकड़े गए एवं अंग्रेजी हुकूमत से मोर्चा लेते हुए शहीद हो गए।

11. **कासिम खाँ :** ये 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लूट–पाट और विद्रोह के आरोप में अंग्रेजी सत्ता द्वारा फाँसी पर चढ़ा दिए गए।

12. **कुहुर सिंह :** ये 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के साथ–साथ अंग्रेजी अधिकारियों पर आक्रमण करने के आरोपों में पकड़े गए एवं अंग्रेजी हुकूमत से मोर्चा लेते हुए शहीद हो गए।

13. **गणेशशंकर विद्यार्थी :** इनके पूर्वज जनपद के हथगाम के रहने वाले थे। इनका जन्म अतरसुइया, इलाहाबाद स्थित इनके ननिहाल में 26 अक्टूबर, 1890 को हुआ था। ये एक निर्भीक और साहसी पत्रकार रहे। महाराणा प्रताप के जीवन और व्यक्तित्व से प्रभावित होकर इन्होंने 09 नवंबर 1913 को कानपुर से 'प्रताप' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला, जिसे 1920 से दैनिक कर दिया। इन्होंने 'प्रभा' नाम की एक साहित्यिक मासिक पत्रिका भी निकाली थी। विक्टर ह्यूगो के दो उपन्यासों– 'द मिजरेबिल्स' व 'नाइंटी थ्री' के अनुवाद भी इन्होंने किए और 'हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग' के गोरखपुर में संपन्न हुए 19वें अधिवेशन के ये सभापति भी चुने गए थे। सन 1916 से लेकर अपने जीवन के अंत तक ये फतेहपुर में सक्रिय रहे और काँग्रेस की स्थानीय इकाई के गठन से लेकर विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक व स्वाधीनता की लड़ाई से जुड़ी गतिविधियों में लिप्त रहे। 'अभ्युदय', 'सरस्वती', 'कर्मयोगी', 'स्वराज्य', 'हितवार्ता' जैसे पत्र–पत्रिकाओं से भी ये जुड़े रहे। पहले इन्होंने लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को अपना सामाजिक–राजनीतिक गुरु माना था, किंतु तिलक के अवसान के बाद ये गांधीजी के अनन्य भक्त हो गए थे। ये अनेक बार जेल गए। 25 मार्च 1931 को ये कानपुर में सांप्रदायिक दंगे में शहीद हो गए।

14. **नेमत खाँ :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की सहायता से अंग्रेजी कार्यालयों को नुकसान पहुँचाने के आरोपों में ये पकड़े गए एवं अंग्रेजी सेना के साथ मुठभेड़ में मारे गए।

15. **नूरूद्दीन खाँ :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के आरोपों में ये पकड़े गए एवं अंग्रेजी छापामारी कार्यवाही में मारे गए।

16. **निर्मल सिंह :** ये खागा निवासी दरियाव सिंह के भाई थे, जिन्हें सन 1857 के स्वतंत्रता– संग्राम के समय 06 मार्च 1858 को क्रांतिवीर दरियाव सिंह और उनके पुत्र आदि सहित फांसी दे दी गई थी। ये भी क्रांतिकारियों के साथ अनेक मोर्चों पर लड़े थे।

17. **पूरन :** स्वतंत्रता–संग्राम में लूट–पाट और विद्रोह के आरोप में ये 1857 में पकड़े गए एवं बाद में आजीवन कारावास की अवधि में जेल में ही शहीद हो गए।

18. **बख्तावर सिंह :** ये फतेहपुर के रहने वाले थे, जिन्होंने खागा निवासी महान क्रांतिकारी दरियाव सिंह के नेतृत्व में 1857 की क्रांति में अंग्रेजों के खिलाफ अनेक लड़ाइयाँ लड़ीं और अंत में बाँदा (अब चित्रकूट) जनपद के पुरवा तरौंहा स्थित पड़ाव में मोर्चा संभालते हुए अंग्रेजों से हुई मुठभेड़ में शहीद हो गए।

19. **बहादुर सिंह :** ये खागा के रहने वाले थे और क्रांतिवीर दरियाव सिंह के चचेरे भाई थे। महान

स्वतंत्रता सेनानी दरियाव सिंह के नेतृत्व में 1857 की क्रांति में इन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ अनेक लड़ाइयाँ लड़ीं। अपने साथियों के साथ पकड़े जाने पर न्याय के नाटक के बाद 06 मार्च 1858 को दरियाव सिंह, निर्मल सिंह, सुजान सिंह, तुरंग सिंह, रघुनाथ सिंह और शिवदयाल सिंह के साथ इन्हें भी फांसी दे दी गई।

20. **बेनीमाधव सिंह :** ये अमर शहीद दरियाव सिंह के अभिन्न मित्र थे तथा शंकरपुर के रहने वाले थे। सन 1857 की क्रांति में इन्होंने क्रांतिकारियों का पूरा साथ दिया था और अंग्रेजों से लोहा लेते हुए शहीद हो गए।

21. **महाराज सिंह :** इस महावीर स्वतंत्रता सेनानी के बारे में कहा जाता है कि ये जोधासिंह अटैया के सेनापति थे, जिन्होंने गंगापार के अपने निर्वासित ठिकाने से अपने लगभग तीन हजार सैनिकों के साथ 16 मई 1858 से गंगा किनारे शिवराजपुर में अपना पड़ाव डाल दिया था और मौका देखकर तीन–चार जून (1858) के बीच की रात में अपने साथियों की सहायता से खजुहा के निकट स्थित उस इमली के पेड़ (अब बावनी इमली के नाम से प्रसिद्ध) से ठाकुर जोधासिंह अटैया सहित सभी बावन शहीदों के अस्थिपंजरों को उतरवाकर गंगा में प्रवाहित करवा दिया था।

22. **मिर्जा :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के आरोपों में ये अंग्रेजी सेना द्वारा पकड़े गए एवं तत्पश्चात अंग्रेजी आक्रमण में शहीद हो गए।

23. **मुनीर खाँ :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्राह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के साथ–साथ अंग्रेजी अधिकारियों पर आक्रमण करने के आरोपों में ये पकड़े गए एवं अंग्रेजी हुकूमत द्वारा फांसी पर चढ़ा दिए गए।

24. **दुलारेलाल तिवारी :** जहानाबाद–अमौली क्षेत्र के नोनारा गाँव के शिवनारायण तिवारी के पुत्र के रूप में सन 1905 में जन्मे दुलारेलाल तिवारी ने 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के सत्याग्रह में भाग लिया था। बाद में असिंचित भूमि के राजस्व के भुगतान को लेकर वे अपने पिता जी द्वारा किए जा रहे आंदोलन में शामिल हो गए। इस आंदोलन में तहसीलदार द्वारा अपने पिता की हत्या किए जाने पर उन्होंने तहसीलदार को मार डाला। उन्हें गिरफ्तार करके तहसीलदार की हत्या का मुकदमा चलाया गया और 1932 में उन्हें नैनी सेंट्रल जेल में फांसी पर चढ़ा दिया गया।

25. **नॉदर खाँ :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लूट–पाट और विद्रोह के आरोप में अंग्रेजी सत्ता द्वारा ये फांसी पर चढ़ा दिए गए।

26. **नाहर सिंह :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लूट–पाट और विद्रोह के आरोप में अंग्रेजी सेना द्वारा ये पकड़े गए एवं बाद में फांसी पर चढ़ा दिए गए।

27. **निद्धा पंडित :** ये सरकंडी निवासी थे, जो सन 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में शहीद हो गए।

28. **जोधासिंह अटैया :** अटैया रसूलपुर निवासी अमर सिंह जोधासिंह सन 1857 की क्रांति के फतेहपुर जनपद के नायकों में से प्रमुख थे। ये जमींदार ठाकुर भवानी सिंह के पुत्र थे। नेतृत्व और छापामार युद्ध में पारंगत इस योद्धा ने महान क्रांतिकारी दरियाव सिंह से मिलकर प्रथम स्वतंत्रता–संग्राम में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और अंग्रेजी शासकों की नाक में दम कर दिया था। क्रांतिवीर दरियाव सिंह के शहीद होने के बाद ये स्वातंत्र्य वीरों का नेतृत्व करते रहे, किंतु अंग्रेजों की

पकड़ से दूर रहे। हारकर अंग्रेजों ने तत्कालीन नेपालनरेश जंगबहादुर को एक ब्रिगेड के साथ 31 मार्च 1858 को फतेहपुर बुलाया और जोधासिंह अटैया को उनके इक्यावन अन्य साथियों के साथ पकड़कर (बिंदकी से तीन किलोमीटर दूर, खजुहा के पहले, सड़क के बगल में स्थित) इमली के पेड़ पर लटका दिया गया। वह इमली का पेड़ आज भी है और आज इसे 'बावनी इमली'' के नाम से जाना जाता है, जो फतेहपुर जनपद का प्रमुख पर्यटन–स्थल है। बावन क्रांतिकारियों को एक साथ फांसी देने का अत्यंत क्रूरता और निर्दयतापूर्ण कृत्य अंग्रेजों द्वारा 28 अप्रैल 1858 को अंजाम दिया गया था तथा उन बावन अमर शहीदों में सर्वोपरि ठाकुर जोधासिंह अटैया थे।

29. **जंग खाँ :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में ये लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के साथ–साथ अंग्रेजी अधिकारियों पर आक्रमण करने के आरोपों में पकड़े गए एवं अंग्रेजी हुकूमत से मोर्चा लेते हुए फतेहपुर–कानपुर संभाग में शहीद हो गए।

30. **तुरंग सिंह :** महान क्रांतिकारी दरियाव सिंह के नेतृत्व में 1857 की क्रांति में इन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ अनेक लड़ाइयाँ लड़ीं और अंत में पकड़े जाने पर 06 मार्च 1858 को इन्हें फांसी दे दी गई।

31. **दरियाव सिंह :** महान क्रांतिकारी दरियाव सिंह 06 मार्च सन 1858 को शहादत को प्राप्त हुए थे। 23 जून 1757 में हुए प्लासी के युद्ध के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी भारत के बड़े भू–भाग पर व्यापारी से शासक की भूमिका में आ चुकी थी, जिससे फतेहपुर का भौगोलिक क्षेत्र भी अछूता न रह सका था और डलहौजी की अपहरण वाली नीति के चलते सन 1801 में यह भू–भाग भी अंग्रेजों के कब्जे में आ गया था। सन 1826 में यह भू–भाग फतेहपुर जनपद बना दिया गया था और फतेहपुर नगर को इसका मुख्यालय। 1857 की क्रांति के पहले यह संभाग अकाल से झुलस रहा था। उस समय देश को अंग्रेजों के चंगुल से छुड़ाने की भूमिगत पहल चल रही थी। क्रांतिकारियों, पत्रकारों व बुद्धिजीवियों ने मिलकर 31 मई 1857 को युद्ध का बिगुल फूंकने का निर्णय लिया था। 04 जून को कानपुर और 07 जून को प्रयागराज क्रांतिकारियों द्वारा पहले ही स्वतंत्र घोषित कर दिए गए थे तथा इसके बाद लगभग 200 विद्रोहियों ने जनपद फतेहपुर के मुख्यालय में डेरा डाल दिया था। 08 जून को महान क्रांतिकारी दरियाव सिंह के सेनानायक व उनके वीर पुत्र सुजान सिंह ने खागा के राजकोष में कब्जा करने के बाद स्वतंत्रता का ध्वज लहरा दिया था। 09 जून को फतेहपुर मुख्यालय पर भी नियंत्रण कर लिया गया था। 10 जून को क्रांतिकारियों ने जेल में कैद बंदियों को मुक्त करवाया था और नाना साहब ने फतेहपुर के तत्कालीन डिप्टी कलेक्टर हिकमत उल्ला खाँ को स्वतंत्र सरकार का प्रशासक नियुक्त कर दिया था। प्रयागराज, फतेहपुर और कानपुर में पूर्ण अधिकार मिलने की खुशी में बिठूर में तोपें दागी गईं थीं। क्रांतिकारियों ने सभी जिलों के कोतवालों को यह आदेश दिया था कि नगर व गाँवों में यह मुनादी करवा दी जाए कि अब अपनी सरकार है। फतेहपुर जनपद में 32 दिनों तक स्वतंत्र सरकार चली थी। उधर अंग्रेजी सेना ने अपनी ताकत बटोरी और 11 जून को मेजर रिनार्ड को फतेहपुर में पुनः अधिकार जमाने के लिए प्रयागराज से रवाना कर दिया था। क्रांतिवीर दरियाव सिंह ने यह सूचना मिलते ही इसकी जानकारी नाना साहब को दे दी थी और मोर्चाबंदी करते हुए अपने सैनिकों को तैनात कर दिया था। 11 जुलाई को मेजर रिनार्ड ने दरियाव सिंह के महल पर तोपों से आक्रमण करके पूरी तरह से नष्ट कर यिा था, किंतु उसके हाथ कोई क्रांतिकारी न लग सका था। अंग्रेजी सेनाओं के बढ़ते दबाव को देखते हुए दरियाव सिंह के नेतृत्व में फतेहपुर जिले के क्रांतिकारियों ने यमुना पार करके बाँदा जनपद में अपने सुरक्षित ठिकाने बना लिए थे। अंग्रेज छल–छद्मपूर्ण धूर्तता में सिद्धहस्त थे, जिसके फलस्वरूप दरियाव सिंह के साथी के द्वारा विश्वासघात करवाकर वे क्रांतिकारियों को पकड़ने में सफल रहे थे और अभियोजन का स्वाँग भरते हुए अंग्रेजी न्याय व्यवस्था द्वारा अंततः

06 मार्च 1858 को दरियाव सिंह को उनके पुत्र आदि सहित फांसी दे दी गई थी। इनकी सारी संपत्ति भी जब्त कर ली गई थी।

32. **ताहिर खाँ** : 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लूट–पाट और विद्रोह के आरोप में ये अंग्रेजी सेना द्वारा पकड़े गए एवं बाद में फांसी पर चढ़ा दिए गए।

33. **शिवरानी देवी** : फतेहपुर नगर से दक्षिण 13 किलोमीटर दूर गाजीपुर निवासिनी, शिवरानी देवी 1943 में शहीद हुई थीं। इनके पति बसंत सिंह भी स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ–साथ राजनेता और समाजसेवी थे। इनके पति के पितामह ठाकुर ईश्वर सिंह क्रांतिवीर थे, जो भारत के प्रथम स्वाधीनता–संग्राम में बलिदान हो गए थे। शिवरानी देवी फतेहपुर जनपद की नारियों के लिए आदर्श थीं और स्वातंत्र्य वीरांगना होने के साथ–साथ गीतकार भी थीं।

34. **शिवदयाल सिंह** : ये जमुरावाँ के रहने वाले थे और 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने, अंग्रेजी सरकार उखाड़ फेंकने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के साथ–साथ फतेहपुर–कानपुर संभाग सहित अनेक स्थानों पर महीनों युद्ध लड़ने के आरोप इन पर लगे, साथ ही अंग्रेजी ठिकानों पर अनेक आक्रमण करने के आरोप सहित अन्य आरोपों में इन्हें इनके साथियों के साथ 06 मार्च 1858 को मृत्युदंड की सजा दे दी गई और इनकी संपत्ति जब्त कर ली गई।

35. **शमशेर खाँ** : अंग्रेजी सेना द्वारा 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लूट–पाट और विद्रोह के आरोप में ये पकड़े गए एवं बाद में आजीवन कारावास की अवधि में 1858 में जेल में ही मृत्यु को प्राप्त हो गए।

36. **लुफ्त खाँ** : ये भी 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में फांसी पर चढ़ा दिए गए।

37. **सुजान सिंह** : ये खागा के महानायक दरियाव सिंह के पुत्र थे। 08 जून 1857 को क्रांतिकारी दरियाव सिंह के इस वीर सेनानायक पुत्र ने खागा तहसील के राजकोष पर कब्जा कर लिया था और स्वतंत्रता का ध्वज लहरा दिया था। तत्पश्चात 09 जून को फतेहपुर कचहरी और राजकोष में कब्जा जमाने के लिए उन्होंने अपने सारे सैनिकों के साथ धावा बोल दिया था, जिसमें अटैया रसूलपुर के जोधासिंह अटैया, जमुरावाँ के ठाकुर शिवदयाल सिंह, कोराई के बाबा गयादीन दुबे भी अपने क्रांतिकारी साथियों के साथ शामिल हुए थे। अनेक मोर्चों पर विजय प्राप्त करते हुए ये 32 दिनों तक फतेहपुर जनपद को स्वतंत्र रहे। अपने महान पिता के साथ पकड़े जाने पर न्याय–व्यवस्था के द्वारा नाटक खेला गया और फिर 06 मार्च 1858 को पिता दरियाव सिंह समेत निर्मल सिंह, तुरंग सिंह, रघुनाथ सिंह और शिवदयाल सिंह के साथ उन्हें भी फांसी दे दी गई।

38. **सीताराम** : नारायणपुर मजरे कलाना के वासी इस योद्धा को 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के आरोपों में पकड़ा गया एवं अंग्रेजी छापामारी कार्यवाही में मार डाला गया।

39. **शेर सिंह** : 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के आरोपों में ये पकड़े गए एवं अंग्रेजी छापामारी कार्यवाही में मारे गए।

40. **शीतल सिंह** : अंग्रेजी सेना द्वारा 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के आरोपों में ये पकड़े गए एवं अंग्रेजी छापामारी कार्यवाही में शहीद हो गए।

Research Hub International Journal

41. **सादिक अली :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में पड़ोसी लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने, अंग्रेजी सरकार उखाड़ फेंकने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के साथ–साथ अंग्रेजी ठिकानों पर अनेक आक्रमण करने के आरोपों में अंग्रेजी हुकूमत द्वारा घात लगाकर ये शहीद कर दिए गए।

42. **शेर अली :** ये अंग्रेजी सत्ता से स्वयं लोहा लेते रहे और लोगों को भी विद्रोह के लिए आर्थिक मदद देते रहे। अंग्रेजों से आमने–सामने की लड़ाई में ये 1857 में शहीद हो गए।

43. **मौहम्मद दीन :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लूट–पाट और विद्रोह के आरोप में ये अंग्रेजी सेना द्वारा पकड़े गए एवं बाद में फांसी पर चढ़ा दिए गए।

44. **रघुनाथ सिंह :** खागा निवासी महान क्रांतिकारी दरियाव सिंह के नेतृत्व में 1857 की क्रांति में इन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ अनेक लड़ाइयाँ लड़ीं और अंत में पकड़े जाने पर अनेक साथियों के साथ इन्हें भी फांसी दे दी गई।

45. **रुस्तम अली :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के साथ–साथ अंग्रेजी ठिकानों पर अनेक आक्रमण करने के आरोपों में अंग्रेजी हुकूमत द्वारा घात लगाकर पकड़े जाने पर इन्हें फांसी दे दी गई।

46. **रामलाल :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के आरोपों में ये भी पकड़े गए एवं बाद में अंग्रेजी छापामारी कार्यवाही में मारे गए।

47. **रामप्रसाद :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लूट–पाट और विद्रोह के आरोप में ये पकड़े गए एवं बाद में अंग्रेजी सेना द्वारा फांसी पर चढ़ा दिए गए।

48. **मेहर अली :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों के साथ अंग्रेजी भवनों पर आक्रमण के आरोपों में ये अंग्रेजी सेना द्वारा पकड़े गए एवं बाद में अंग्रेजी छापामारी कार्यवाही में शहीद हो गए।

49. **मोतीलाल :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की सहायता से अंग्रेजी संपत्ति को नष्ट करने के आरोपों में ये पकड़े गए तथा बाद में अंग्रेजी सेना की कार्यवाही में शहीद हो गए।

50. **मौहम्मद खाँ :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के आरोपों में ये पकड़े गए। बाद में अंग्रेजी छापामारी कार्यवाही में शहीद हो गए।

51. **रामदीन :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के आरोपों में ये भी पकड़े गए एवं बाद में अंग्रेजी सेना द्वारा की गई कार्यवाही में मारे गए।

52. **रहीम बख्श :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के साथ–साथ अंग्रेजी ठिकानों पर अनेक आक्रमण करने के आरोपों में अंग्रेजी हुकूमत द्वारा ये घात लगाकर शहीद कर दिए गए।

Research Hub International Journal

53. **मौहम्मद फजल :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लूट–पाट और विद्रोह के आरोप में ये अंग्रेजी सेना द्वारा पकड़े गए एवं बाद में आजीवन कारावास की अवधि में जेल में ही शहीद हो गए।

54. **सेवक सिंह :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में पड़ोसी लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने, अंग्रेजी सरकार उखाड़ फेंकने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के साथ–साथ फतेहपुर–कानपुर संभाग में अंग्रेजी ठिकानों पर अनेक आक्रमण करने के आरोपों में अंग्रेजी हुकूमत द्वारा घात लगाकर ये शहीद कर दिए गए।

55. **गयादीन दुबे :** बाबा गयादीन (दुबे) के नाम से प्रख्यात इस महान स्वतंत्रता सेनानी ने अपनी टुकड़ी के साथ 1857 की असाधारण क्रांति में तन–मन–धन से क्रांतिकारों दरियाव सिंह और ठाकुर जोधासिंह अटैया को अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इनका जन्म सन 1803 में कोराई में ही हुआ था। इन्होंने अंग्रेजों से अनेक मोर्चों पर लोहा लिया था। पकड़े जाने पर अंग्रेजी सत्ता द्वारा इन्हें अभियोग चलाकर मृत्युदंड दे दिया गया था, किंतु फांसी की सजा के पहले ही इन्होंने अपनी अंगूठी में जड़े हीरे को चाटकर अपने प्राण त्याग दिए थे।

56. **ईसुरी सिंह :** ये फतेहपुर नगर से दक्षिण 13 किलोमीटर दूर गाजीपुर निवासी थे और प्रथम स्वतंत्रता–संग्राम में शहीद हुए। युवावस्था में अंग्रेजी दमनचक्र से बचने के लिए संगठित क्रांति के उद्देश्य में रीवा (मध्य प्रदेश) छोड़कर 1850 के आस–पास फतेहपुर जनपद के गाजीपुर कस्बे में आ बसे। सन 1857 की क्रांति में जब खागा के ठाकुर दरियाव सिंह एवं उनके साथी स्वतंत्रता सेनानियों की टुकड़ियाँ अंग्रेजों से लोहा ले रही थीं, तो नवयुवक ईसुरी अपनी अलग टुकड़ी लेकर गाजीपुर को केंद्र बनाकर योजनाबद्ध तरीके से छापामार गुरिल्ला युद्ध कर रहे थे। इनके कल्लू कहार नामक साथी ने इन्हें धोखा दिया, जिसके कारण इन्हें इनके साथियों के साथ अंग्रेज घुड़सवारों द्वारा पकड़ लिया गया। सड़क के बगल में स्थित इमली के पेड़ पर ईसुरी सिंह सहित बावन क्रांतिकारियों को एक साथ फांसी पर लटका दिया गया था। वह इमली का पेड़ आज भी है और इसे बावनी इमली के नाम से जाना जाता है।

57. **कामू खाँ :** 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के आरोपों में अंग्रेजी सेना द्वारा पकड़े गए एवं अंग्रेजी छापामारी कार्यवाही में मारे गए।

58. **कमरुद्दीन :** ये 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में लोगों को विद्रोह के लिए भड़काने और विद्रोहियों की आर्थिक सहायता के आरोपों में अंग्रेजी सेना द्वारा पकड़े गए एवं अंग्रेजी छापामारी कार्यवाही में मारे गए।

59. **लालाधर एवं लुखूराम :** ये अंग्रेजी सेना द्वारा 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में मारे गए।

बावनी इमली नरसंहार – एक दृष्टि :

भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास के पन्ने पलटने पर असंख्य घटनाएँ एवं तथ्य देखने को मिलते हैं। प्रत्येक प्रांत, क्षेत्र, जनपद की भूमिकाएँ उपयोगी एवं महत्वपूर्ण थीं जिस प्रकार जलियाँवाला बाग हत्याकांड की बर्बरता आज भी हर भारतवासी के जेहन में है उसी प्रकार उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जनपद की बावनी इमली नरसंहार भी बहुत ही दर्दनाक अमानवीय एवं वीभत्स घटना थी लेकिन इस बारे में बहुत कम लोगों को पता है। आज भी जिस पेड़ पर बावन सेनानियों को एक साथ फांसी पर लटकाया गया था वे गवाह के रूप में उपलब्ध हैं। इस नरसंहार में शहीद हुए समस्त देशभक्तों के नाम कुछ तो

ज्ञात हैं कुछ आज भी अज्ञात हैं। बावनी इमली नरसंहार का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है –

फतेहपुर जनपद के बिंदकी–खजुहा मार्ग पर बिंदकी से तीन किलोमीटर दूर तथा खजुहा से पहले सड़क के पास ही इमली का पेड़ था इसमें बावन (52) स्वतंत्रता सेनानियों को सामूहिक रूप से लटकाकर फांसी दे दी गई थी। इन सेनानियों में जोधासिंह अटैया एवं ईसुरी सिंह भी शामिल थे। यह घटना 28 अप्रैल, 1858, फतेहपुर जनपद के काले अध्याय के रूप में दर्ज है। यहाँ यह बताना आवश्यक है कि जनपद के लोगों में अंग्रेजों के जुल्मों का भय इतना अधिक समा गया था कि सन 1858 की 03 जून तक सेनानियों के शव इमली के पेड़ तक लटकते रहे।

इसे परिणामस्वरूप सेनानियों के शवों को चील एवं गिद्धों ने नोच–नोचकर मांसहीन बना दिया था। कहा जाता है कि जोधासिंह अटैया के सेनापति महराज सिंह ने लगभग 3000 सैनिकों के साथ 16 मई 1858 से गंगा किनारे अपना पड़ाव डाला तथा मौका देखकर तीन जून की रात में साथियों की सहायता से सभी अस्थि–पंजरों को गंगा में प्रवाहित किया। प्रलेखीय स्रोतों से जिन शहीदों के नाम पता चल सके हैं उनका विवरण इस प्रकार है – सिच्चा सिंह, देवीचरण, प्यारेलाल तिवारी, भारत सिंह, बंदीदेन पाण्डेय, रामपाल, रामरतन, शिवसागर, पंचमराम, छबिनाथ, रामेश्वर, द्वारिका, सूरजदीन, गुरु प्रसाद पाण्डेय एवं श्यामलाल सचान आदि।

उपसंहार (Conclusion) :

इस लेख के अध्ययन उपरांत यह स्पष्ट हो रहा है कि स्वतंत्रता आंदोलन में सभी धर्मों, वर्गों, जातियों एवं क्षेत्रों की अहम भूमिका रही है। साथ ही हमारे बीच के अपने लोग ही अंग्रेजों का साथ देने से भी नहीं चूके तथा अपनों के साथ गद्दारी करते रहे। बावनी इमली की घटना, जिसमें शव कई दिनों तक पेड़ पर ही लटकते रहे, मानवता को झकझोर कर रखने वाली घटना है। जलियाँवाला बाग की घटना एवं बावनी इमली वाली घटना वीभत्स घटनाओं की गवाह हैं।

संदर्भ (References) :

- सिंह, चंद्रपाल (2015), प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में फतेहपुर जनपद का योगदान।
- अवस्थी, ओमप्रकाश, संपा॰ (2015)। अनुनाक साहितय रत्नालय, कानपुर, पृ.23
- Dictionary of Martyrs : India's Freedom Struggle (1857-1947) Vol.2, Part I&II (2013).
- शुक्ल, अश्वनी कुमार (2023)। उत्तर प्रदेश का स्वतंत्रता संग्राम : फतेहपुर, लेखश्री पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- पांडेय, बालकृष्ण, संपा॰ (2011)। यशस्वी पीढ़ियाँ, राज स्मृति सेवा संस्थान, गाजीपुर, फतेहपुर, पृ. 481
- Encyclopaedic District Gazetteers of India : Central Zone (2009). Ed. by S.C.Bhatt, Gyan Publishing Housek, P.619-620.

Research Hub International Journal